भक्ति विस्तारी (४२)

आयो अबलु मिठो अवतारी मती हर हंधि आ हुब़कारी

अमां सुखदेवी मोद मयी आ जंहिजो बिचड़ो विश्व विजयी आ लाती जग़त में भक्ति बहारी।।

वद भागिण दौलतां दाई जंहि पालियो प्रभु सुखदाई देई लाली कई ललिकारी।।

बाल रुप में साई मिठिड़ो लगे प्राणिन प्यारो सुठिड़ो जस चान्दनी छाई चौधारी।।

जद़हीं मास्तर सबकु सेखारियो साई राम नाम जसु ग़ायो पढ़ी सेघ मां विद्या सारी।।

कद़हीं गुरु अ जी झूलिन झिलड़ी कद़हीं आणिनि छेणिन छिलड़ी गुरू अ अमर आशीश उचारी।।

थिया नंढ़ेई निर्मल पेही विया प्रीतम जे घर पेही माणिनि मुहबत जी मिठी माड़ी।।

नर नारियूं दिसी ठरिन था रूप अमृत ढुिकड़ा भरिनि था चविन जानिब जी जै कारी।। जिनि घिटियुनि घोटु घुमे थो अची जसिड़ो चरण चुमे थो वहे सरिता सिकड़ी अ वारी।।

धर ततड़ी अ झंगल झागे राति जानिब लाइ रोई जागे लगी लिंव लिंव लालन लारी।।

थियो सतिसंग सदोरो दींहु विसयो मुहिबत मिहर जो मींहु सज़ी सिंधुड़ी तलब सां तारी।।

नितु अचिन सन्तिन जा टोला जेके करिन राम जी ग़ोल्हा बुधी वचन चविन ब़लहारी।।

किन रांझन रूह रिंहाणि जंहिजी वेद बि किन वाखाणि थिये गुणिन गीत गुलज़ारी।।

कद़हीं कसिरत करे करतारु कद़हीं दान दिये दातारु कद़हीं घुमे राम फुलवाड़ी।।

कथा कीर्तन मौज मची आ दिलि सिभनी रंग रची आ थिया राम कृष्ण रिझिवारी।।

ऐब दासनि कीन द़िठाऊं थोरी श्रद्धा द़िसी खंयाऊं पंहिजे बृद जी महिमा देखारी।।

अमड़ि साई अ जो निर्मलु नींहु सदां वसे थो महिरुनि मींहु आहे अजबु भक्ति विस्तारी।।